Lecture No. - 01

Name of the College - A.P.S.M College, Barauni, Begusarai
Name - Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt. - A.I.H.&C
Lession / plan for class - B.A, A.I.H.&C (H) part-II - paper ?
Date. 10-04-2021
Name of the topic — Regional Dynasties — (a) The pals.

पालवंश

पालवंश का राजनीतिक इतिहास →

गौड़ के प्रसिद्ध शासक शशांक की मृत्यु के पश्चात् एक शताब्दी से भी अधिक समय पश्चात् तक बंगाल में अराजकता रही। यह अनुभव किया गया कि यदि एक शक्तिशाली केन्द्रीय शासन स्थापित किया जाता तो इस प्रकार की स्थिति को सुधारा जा सकता था। परिणामस्वरूप 750 ई. में जनता ने गोपाल नामक व्यक्ति को अपना शासक चुना और उसने अव्यवस्था को दूर किया। गोपाल ने 750 से 770 ई. तक राज्य किया। बताया गया है कि गोपाल के पिता का नाम व्यास था। जो सेनानी के रूप में प्रसिद्ध था। गोपाल के दादा का नाम दयितविष्णु था। गोपाल क्षत्रिय था। चुनाव के समय एक मुखिया नेता था। जिसने शासक और सेनानी के रूप में प्रसिद्धि पाई थी। गोपाल का प्रारंभिक राज्य वंश या पूर्वी बंगाल में था। गोपाल के शेष जीवन के विषय में हमें कुछ भी ज्ञात नहीं है। प्रतीत होता है कि उसने राज्य में शान्ति स्थापित की

P.T.O.

और वंश की भावी महत्ता के बीज बोए। संभव है कि अपनी मृत्यु से पहले उसने तो बंगाल पर अपना राज्य अधिकार सुदृढ़ कर लिया है। तिब्बत का इतिहास तारानाथ बताता है कि गोपाल ने ओदन्तपुर का प्रसिद्ध विहार बनवाया।

जब बंगाल अव्यवस्था से ग्रस्त था। तब साधारण कुल में उत्पन्न किसी महत्वाकांक्षी गोपाल ने एक राजवंश की स्थापना की। खलिमपुर-अभिलेख के अनुसार अराजकता से व्याकुल होकर बंगाल की प्रजा ने स्वयं गोपाल को अपना राजा चुना था। इस वंश के सभी राजाओं का नामांत 'पाल' था, इसीलिए यह 'पालवंश' कहलाया। ये लोग किसी पौराणिक नरेश को अपना पूर्वज नहीं मानते थे। इस वंश की स्थापना का श्रेय दयितविष्णु के पिता वप्यट को दिया जाता है। यह वंश किसी राजवंश से संबद्ध नहीं था, वरन् निम्नावस्था से धीरे-धीरे उठा था। बाद में इसे समुद्र अथवा सूर्य के साथ सम्बलित करने का प्रयास अवश्य किया गया। हरिभद्र (धर्मपाल का समकालीन कवि) के आधार पर कुछ विद्वान पालों का सम्बंध बंगाल के बौद्ध खड्गवंश के साथ जोड़ते हैं। इस कथन की पुष्टि अन्य साधनों से नहीं होती है। संध्याकरनंदी-रचित रामचरित और तारानाथ के आधार पर पालों को क्षत्रिय की श्रेणी में रखा जाता है। राष्ट्रकूट और कलचुरी वंशों के साथ उनका वैवाहिक सम्बंध पर इस बात का प्रमाण है। 'मंजुश्रीमूलकल्प' में गोपाल को शूद्रवंश का कहा गया है। (दासजीविनः)। "व्यासपुराण" में उन्हें अधोतम क्षत्रिय कहा गया है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

तिब्बती ग्रंथकार बुस्टन के अनुसार ये लोग नीच जाति के थे। जिस स्थिति में गोपाल का चुनाव हुआ, उससे स्पष्ट होता है कि बंगाल में राजनीतिक चेतना प्रबल थी। पालों के पैतृक घर के सम्बंध में भी मतभेद है। कुछ लोग मगध को कुछ बंगाल को पैतृक घर मानते हैं।

(1) गोपाल (5) राज्यपाल (9) रामपाल, (10) चारन वंश।
(2) धर्मपाल (6) गोपाल द्वितीय एवं अन्य राज वंश
(3) देवपाल (7) महिपाल प्रथम
(4) नारायणपाल (8) नयपाल

(1) <u>गोपाल</u> → पाल वंश का सर्वप्रथम शासक गोपाल था। उसने अराजकता का अंत किया और पुंड्र, बंग तथा मगध पर अपना अधिपत्य किया। पाल वंश की नींव उसके समय दृढ़ हुई। वह बौद्धधर्म का अनुयायी था। उसने नालंदा के समीप उदंतपुर नामक स्थान में एक महाविहार की स्थापना की। उसने लगभग 25 वर्ष तक राज्य किया। गोपाल के बाद उसका पुत्र धर्मपाल शासक हुआ।

(2) <u>धर्मपाल</u> →

धर्मपाल इस वंश का सबसे प्रमुख शासक और संस्थापक था। वह विजयी और धार्मिक था। उसने तत्कालीन उत्तर भारत की अराजकता से लाभ उठाकर अपने राज्य की सीमाएँ खूब बढ़ा ली। तारानाथ के अनुसार P.T.O.

Scanned with CamScanner

उसके राज्य का विस्तार पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक। पश्चिम से जालंधर तक। उत्तर में हिमा-लय और दक्षिण में विंध्यपर्वत तक था। कान्य-कुब्ज का चक्रायुध उसका आश्रित और अधीन था। कन्नौज की सभा में 20 राजाओं ने उसका आधिपत्य स्वीकार किया था। आधिपत्य के लिए उसे प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों से संघर्ष करना पड़ा। प्रतिहार वत्सराज और राष्ट्रकूट ध्रुव ने बारी-बारी से उसे पराजित किया। राष्ट्रकूट अभिलेख में कहा गया है कि उसने स्वयं स्वयं आत्मसमर्पण किया। नागभट्ट प्रतिहार ने चक्रायुध से कन्नौज छीनकर धर्मपाल के साम्राज्य का स्वप्न भंग कर दिया। प्रतिहारों और पालों के बीच युगों में संघर्ष हुआ।

बंगाल और बिहार, पर धर्मपाल का एकाधिपत्य था। उसने पंजाब और कन्नौज तक अपने अधिकार का विस्तार किया। पंजाब, पूर्वी राजपूताना, मालवा, बरार, मत्स्य, कुरु, यदु, अवंती, गांधार, आदि के शासक उसकी सत्ता मानते थे। उसने 32 वर्ष तक राज्य किया।

(3) देवपाल →

धर्मपाल के बाद उसका पुत्र देवपाल शासक हुआ। वह 815 ई.पू. में गद्दी पर बैठा। उसने 35 वर्ष तक राज्य किया, और हिमालय, विंध्य तथा रेवा तक के प्रदेश पर विजय प्राप्त की। उसने गुर्जर, जट्ट, हूण और उत्कल के दर्प का दलन किया। उसके शिलालेखों में पाण्ड्य और कंबोज का भी जिक्र है। उत्कल और कामरूप पर भी उसकी विजय का उल्लेख मिलता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(4) नारायणपाल →

देवपाल के बाद नारायणपाल राजा हुआ था। उसके समय में मिहिरभोज और महेन्द्रपाल के आक्रमण हुए। उन्होंने मगध का एक भाग प्रतिहार राज्य में मिला लिया। उसके बाद राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष ने बंगाल पर आक्रमण किया। और अंग, बंग तथा मगध पर अपना आधिपत्य किया। उसके पुत्रों ने कृष्ण द्वितीय ने गौड़ों को विनयव्रत की शिक्षा दी।

(5) राज्यपाल →

नारायणपाल की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र राज्यपाल गद्दी पर बैठा। उसने राष्ट्रकूट तुंग की कन्या से विवाह किया। इस वैवाहिक सम्बन्ध का राजनीतिक महत्व था। प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों के आपसी संघर्ष से लाभ उठाकर उसने सोन नदी के पूर्वी तट पर अपनी पैतृक भूमि पुनः प्राप्त कर ली।

(6) गोपाल द्वितीय →

राज्यपाल की मृत्यु के बाद उसका पुत्र गोपाल द्वितीय गद्दी पर बैठा। उसके समय पालों को उत्तर बंगाल से हाथ धोना पड़ा और बंगाल में कम्बोजों का उदय हुआ। पालसाम्राज्य संकटग्रस्त था इसी समय चंदेल यशोवर्मन और उसके पुत्र धंग ने गौर और मिथिला पर आक्रमण किया। कलचुरियों का आक्रमण भी इसी समय शुरू हो चुका था।

(7) महिपाल प्रथम → प्रायः 980 ई. में उसका पुत्र महिपाल प्रथम शासक हुआ। उसके समय पाल साम्राज्य का पुनः P.T.O.

स्थापना हुआ। एक शिलालेख से पता चलता है कि उस पैतृक राज्य का एक अंश को फिर से प्राप्त किया। राजेन्द्र चोल ने उड़ीसा और कोशल के मार्ग से अभियान किया और उसके सेनापतियों ने दक्षिण राढ़ और बंगाल पर शासन किया।

(8) नयपाल → महीपाल के बाद उसका पुत्र नयपाल राजा हुआ। कलचुरियों से उसका भीषण संघर्ष हुआ। कलचुरी सम्राट लक्ष्मीकर्ण ने पालसाम्राज्य पर आक्रमण कर दिया। और इसकी सेना अंग तक बढ़ गई। बिक्रमशिलामहाविहार के प्रधान आचार्य दीपंकर श्रीज्ञान अतिशा ने हस्तक्षेप किया। कलचुरी तथा पालो के बीच संधि हुई।

(9) रामपाल → रामपाल जब गद्दी पर बैठा, तब पाल साम्राज्य की स्थिति शोचनीय थी। कैवर्त विद्रोहियों के साथ-साथ उसे दुर्धर्ष सामंतों का भी सामना करना पड़ा। रामचरित (संध्याकरणनंदी - रचित) के अनुसार रामपाल ने अपनी व्यक्तिगत औदार्य से उन सामंतों को जीता।

इन सामंतों और अपने मामा राष्ट्रकूट मथन की सहायता से वह कैवर्तो के विरुद्ध बढ़ा। उसने उनके और उनके सेनापति शिवराज ने दिव्योक के पुत्र कैवर्तराज भीम को बंदी बना लिया। बाद में भीम को प्राण दंड मिला और रामपाल ने अपनी पैतृक सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया।

Scanned with CamScanner

उसने कलिंग और कामरूप पर भी विजय प्राप्त की और पूर्व बंगाल के राजा वर्मन ने उसके संरक्षण की प्रार्थना की। रामपाल बहुत दिनों तक इन स्थानों पर अपना अधिकार कायम नहीं रख सका। पूर्वी बंगाल पर सेनों ने और मिथिला पर कर्नाटों ने अपना अधिकार कर लिया। रामपाल का उत्तराधिकारी कुमारपाल था। उसके योग्य मंत्री विद्या देव ने विद्रोही तत्वों का कुछ दिनों के लिए दमन किया। कुछ लोग उसके मंत्री का नाम वैद्य देव भी कहते हैं। कुमारपाल के उत्तराधिकारी शक्तिहीन होते गए। और पालशक्ति। क्षीण होती गई। पूर्वी बंगाल और सीमा पर से उनका अधिकार खत्म हो चुका था। पश्चिम के गहड़वार लोग बढ़ते-बढ़ते मुंगेर तक पहुँच गए थे। मदनपाल ने १४ वर्ष तक मगध और उत्तर बंगाल पर शासन किया। उसे विजयसेन और गहड़वार राजा गोविन्दचन्द्र का सामना करना पड़ा। उसके बाद 1199 ई. में गोविंदपाल शासक हुआ। वही पाल वंश का संभवतः अंतिम राजा था, और उसके बाद पाल-राज्य का अंत हो गया। पाल राजाओं ने चार सौ वर्ष तक बिहार और बंगाल पर शासन किया।

अन्य राजवंश → पालों के बाद बंगाल में चन्द्रवंश का उत्थान हुआ, जिसके राजा अपने-आपको महाराजाधिराज कहते थे। इन लोगों का निवास-स्थान रोहितगीरी (मोतिम्मत्य की P.T.O.

पहाड़ियों में लालमाटी', थर। शिलालेखों में सुवर्णचंद्र, त्रैलोक्यचन्द्र और श्रीचन्द्र को महाराजाधिराज' और 'परमसौगत' उपाधियों से अभिहित किया गया है। श्रीचन्द्र की राजधानी विक्रमपुर थी। उसने पुंड्रवर्धनभुक्ति 'कुमारतालकमंडल' और पद्मा नदी के तट पर पद्मावती विषय में भूमि दान संबंधित अनुदान किए। दूसरा महत्वपूर्ण राजा गोविन्दचन्द्र था। जिसका राज्य वनद्वीप और पौंकघाट में था। वह राजेन्द्रचोल द्वारा पराजित हुआ। कलचुरी आक्रमण के फलस्वरूप इस वंश का अंत हुआ और कलचुरियों की सहायता से उनके स्थान पर यादवों का राज्य शुरू किया।

यादव वंश → इस वंश का प्रमुख राजा जातवर्मा था। उसने कलचुरी कर्ण की पुत्री वीरश्री से विवाह किया तथा विवाह कर अपनी स्थिति दृढ़ की। अंग, कामरूप, दि[illegible] और गोवर्धन के लिए वह संकट बन गया। उसने पुंड्रवर्धनभुक्ति पर आक्रमण भोजवर्मा ने अपने सार्वभौम पद को बनाए रखा और पुंड्रवर्धन तक राज्य किया। यादव राजाओं की पहले पालों ने और फिर सेनों ने पराजित किया और हटा दिया।

भारती कुमारी
A.I.H.C&C
10-04-2021